पाठ = 1 (कृतिका)

मेरे संग की औरतें (कक्षा नौवीं)

प्र०1 लेखिका ने अपनी नानी को कभी देखा भी नहीं फिर भी उनके व्यक्तित्व से वे क्यों प्रभावित थी?

उ० लेखिका की नानी की मृत्यु लेखिका की माँ की शादी होने से पहले ही हो गई थी। अतः उन्हें देखने का प्रश्न नहीं उठता था। लेकिन लेखिका ने नानी के बारे में बहुत कुछ सुना था। उसी सुने हुए वृतांत के आधार पर लेखिका अपनी नानी के व्यक्तित्व से प्रभावित हो गई थी। नानी अनपढ़ होते हुए भी अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व रखती थी। नानी देश की आजादी के लिए जुनून रखती थी।

प्र०2 लेखिका की नानी की आजादी के आंदोलन में किस प्रकार की भागीदारी रही?

उ० लेखिका की नानी की आजादी के आंदोलन में प्रत्यक्ष रूप से भागीदारी भले ही न रही हो पर वे दिल से उसमें शामिल थी। उन्होंने अपने पति के उस मित्र को विश्वास पात्र बनाया जो स्वतंत्रता सेनानी था। उसने अपनी बेटी के लिए ऐसा वर ढूढ़ने का आग्रह किया जो आजादी का सिपाही हो। वैसे उनके मन में आजादी के लिए जुनून था।

प्र०3 लेखिका की माँ परम्परा का निर्वाह न करते हुए भी सबके दिलों पर राज करती थी। इस कथन के आलोक में -:

क लेखिका की माँ के व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए।

उ० लेखिका की माँ परम्परा का निर्वाह नहीं करती थी, फिर भी परिवार के सभी सदस्यों के दिल पर राज करती थी।

इस कथन के आलोक में माँ की विशेषताएँ इस प्रकार थी :—
वे सुंदर व्यक्तित्व की स्वामिनी थीं। वे सुंदर एवं नाजुक थी। उनकी ईमानदारी निष्पक्षता एवं सच्चाई सभी को प्रभावित करती थी। उनकी सलाह का सभी सम्मान करते थे। वे दूसरों की गोपनीय बातों को दूसरों पर प्रकट नहीं करती थी।

ख लेखिका की दादी के घर के माहौल का शब्द-चित्र अंकित कीजिए।

उ० लेखिका की दादी के घर का माहौल अच्छा था। वे अपनी बहू पर किसी प्रकार का ताना-उलाहना नहीं देती थी। दादी के घर में परदादी भी थी। वे अपनी पतोहू के यहाँ लड़की होने की मन्नत माँगकर आई थी। उनके घर में काफी आजादी का माहौल था।

प्र०५ आप अपनी कल्पना से लिखिए कि परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों मानी ?

उ० परदादी ने पतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत इसलिए माँगी होगी क्योंकि वे लीक से हटकर चलती थी। सामान्यत पहली संतान पुत्र माँगी जाती है। पर परदादी को कतार से बाहर चलने का शौक था। उनके मन में लड़कियों के प्रति स्नेह का भाव भी रहा होगा।

प्र०5 डराने-धमकाने उपदेश देने या दबाव डालने की जगह सहजता से किसी को भी सही राह पर लाया जा सकता है। पाठ के आधार पर तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उ० जब एक बार लेखिका के घर में चोर घुस आया था, तब उनकी परदादी ने उसे डराया-धमकाया या उपदेश नहीं दिया, न उनके ऊपर किसी बात का कोई दबाव डाला। लेखिका की परदादी ने उसके साथ सहज व्यवहार किया और उससे अपने लिए कुएँ से पानी मँगवाया तथा उसे भी आधा लौटा पानी पिलाया और परदादी ने उस चोर को अपना बेटा बताया। लेखिका की परदादी के इस सहज व्यवहार से वह चोर चोरी करना छोड़कर खेती के काम में लग गया। अर्थात् वह सही राह पर आ गया।

प्र०6 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है'। इस दिशा में लेखिका के प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

उ० लेखिका मानती थी कि शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। लेखिका जब कर्नाटक के छोटे कस्बे बागलकोट में थी। तब वहाँ कोई ढंग का स्कूल नहीं था। अपने कैथोलिक बिशप में एक स्कूल खोलने की प्रार्थना की। परन्तु वे इसलिए स्कूल खोलना नहीं चाहते थे। क्योंकि वहाँ क्रिश्चियन बच्चों की संख्या बहुत कम थी। लेखिका सभी को शिक्षा की पक्षपाती थी। इसलिए अपने-अपने प्रयासों से एक ऐसा स्कूल खोलकर दिखा दिया। जिसमें बच्चों को हिन्दी, अंग्रेजी और कन्नड़ ये तीनों भाषाएँ पढ़ाई जाती थी। और इस स्कूल को लेखिका ने कर्नाटक सरकार से मान्यता भी दिला दी।

प्र०7 पाठ के आधार पर लिखिए कि परदादी ने पुतोहू के लिए पहले बच्चे के रूप में लड़की पैदा होने की मन्नत क्यों मांगी ?

उ० "मेरे संग की औरतें" नामक पाठ में यह बताया गया है कि निम्नलिखित प्रकार के लोगों को अधिक श्रद्धा भाव से देखा जाता है —

1. जो सदा सच बोलते हो
2. जो किसी की गोपनीय बातों को किसी दूसरे के सामने प्रकट नहीं करते हो।
3. जो अपने इरादों में मजबुत हो।
4. जो दूसरो के साथ सहज व्यवहार करते हो।
5. जो हीन भावना के शिकार न हो।

प्र०8 'सच' अकेलेपन का मजा ही कुछ और है' :- इस कथन के आधार पर लेखिका की बहन एवं लेखिका के व्यक्तित्व के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ० लेखिका की बहन रेणु अपनी इच्छा की स्वामिनी थी। वह जो कुछ ठान लेती थी उसे करके ही रहती थी। एक बार बहुत तेज वर्षा हुई कोई वाहन सड़क पर नही निकला और रेणु की स्कूल की बस भी उसे लेने नहीं आई, तो वह पैदल ही स्कूल चली गई, लेकिन स्कूल बंद था। फिर भी उसे इस बात का मलाल नहीं था। वह वापस दो मील चलकर घर पर भी पहुँच गई। लेखिका अपनी बहन की इस घटना को सुनकर रोमांचित हो उठी। उसे ऐसा लगा कि अकेलेपन का मजा ही और है। अपनी ही धुन में और अपनी ही मंजिल की ओर चलते चले जाने में एक अनोखा ही सुख मिलता है।